स्वप्नदर्शी व्यक्तित्व का धरातल

राजाराम भादू

मैं उन सौभाग्यशाली लोगों में शामिल हूं जिन्हें सम्माननीय प्रो. विजयशंकर व्यास का किंचित स्नेह हासिल हो सका। मेरी उनसे आखिरी मुलाकात जयपुर ओटीएस में बिड़ला फाउण्डेशन के बिहारी पुरस्कार कार्यक्रम में हुई। यह पुरस्कार हमारे मित्र सत्यनारायण को मिला था और व्यास जी ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की थी। वे सदैव की भांति मुस्कुराते हुए मिले। उन्होंने ''विकल्प'' में छपे मेरे लेख की सराहना की। ये लेख अमेरिका में बन्दूक की हिंसक संस्कृति के विरुद्ध वहां हुए छात्रों और युवाओं के अभूतपूर्व विरोध पर लिखा गया था। तब व्यास जी को देखकर यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि कुछ ही महीनों बाद वे स्मृति-शेष हो जाएंगे। जो भी हो हमें सच का साक्षात्कार तो करना ही है।

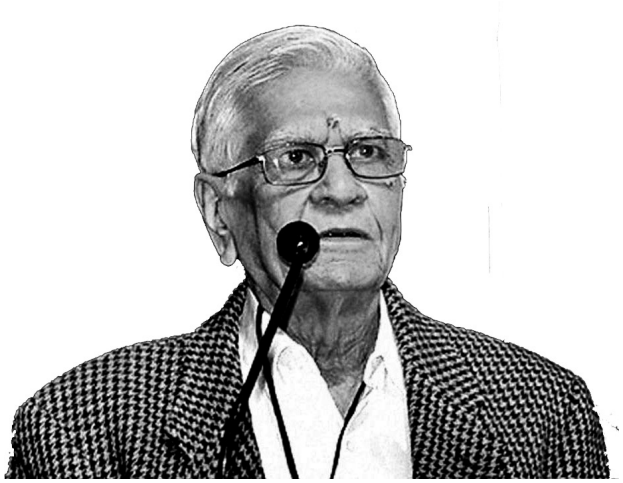

(21 अगस्त, 1931 से 12 सितम्बर, 2018)

व्यास जी राजस्थान की उन चंद विभूतियों की गौरवशाली कतार में से हैं जिन्होंने इस प्रदेश के विकास के भिन्न-भिन्न आयामों को समृद्धि और उत्कृष्टता प्रदान करने में योगदान किया है। हमारे यहां पहली कतार तो उन पुरोधाओं की है जिन्होंने आजादी की लड़ाई लड़ी और नये निर्मित हुए राजस्थान की सभ्यता और संस्कृति को एक शक्ल देने का उपक्रम किया।

इसके पीछे अगली कतार इस तस्वीर में रंग भरने और डिटेल्स सृजित करने वालों की है। दुर्भाग्य से पिछले दशकों से हम इन्हें खोते जा रहे हैं। इनमें विजयदान देथा, हरीश भादानी, कोमल कोठारी, अनिल बोर्डिया, मीठा लाल मेहता और शिवरतन थानवी जैसी कई हस्तियां हैं। व्यास जी भी इसी कतार के एक बड़े स्वप्नदर्शी और प्रेरक व्यक्तित्व थे।

व्यास जी के जीवन वृत्त से सामान्य लोग अवगत हैं। भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद से विश्व बैंक तक और फिर प्रधानमंत्री वाजपेयी और मनमोहन सिंह के आर्थिक सलाहकार रहने के बाद उनके राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत होने की यात्रा निरंतर ऊर्ध्वगामी है। उनके इस क्षैतिजिक व्यक्तित्व को न तो मैं समझ सकता हूं और इस पर कोई टिप्पणी करने का तो सवाल ही नहीं है। मुझे तो उन्हें पास से देखने-समझने का अवसर आईडीएस (इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलेपमेंट स्टडीज - विकास अध्ययन संस्थान, जयपुर) में 1995 के आस-पास मिला। वहां जाने के कुछ समय बाद ही किसी कार्यक्रम में उन्हें सुनने का अवसर था। तब मैंने गरीबी की

एक बिल्कुल अलग परिभाषा पहली बार सुनी। व्यास जी कह रहे थे - विकल्पों का अभाव ही गरीबी है। मैं इस सूत्र वाक्य के निहितार्थों में खोकर चकित रह गया। बाद में आईडीएस से बाहर आने के बाद भी उनका स्नेह मुझे हमेशा मिलता रहा।

जयपुर के झालाना संस्थानिक क्षेत्र में हम आज जिस आईडीएस को देखते हैं, वह व्यास जी की संकल्पना का ही मूर्त रूप है। मैंने बापू नगर के एक घर के बाहरी हिस्से के भूतल में संचालित आईडीएस को देखा था। उसके वर्षों बाद झालाना के इस भवन में सक्रिय इस अकादमिक संस्थान में एक शोधार्थी के रूप में आया तो पता चला कि यह स्वरूप व्यास जी का दिया हुआ है। उन्होंने इसे सिर्फ भौतिक भव्यता ही नहीं प्रदान की थी बल्कि यह उनके समय में अकादमिक उत्कृष्टता का एक अहम उदाहरण बन गया था।

व्यास जी ने आईडीएस को सही मायने में विकास के अध्ययनों से जोड़ा। विशेषकर राजस्थान के विशिष्ट संदर्भों से अकादमिक अनुसंधानों की एक गहरी और ठोस संगति स्थापित की। एक कृषि अर्थशास्त्री के रूप में वे राजस्थान के प्रसंग को तो समझते ही थे लेकिन यहां की संस्कृति को भी उन्होंने परिप्रेक्ष्य से कभी ओझल नहीं होने दिया। उनकी अन्तर्दृष्टि एक शुष्क अर्थशास्त्री की नहीं बल्कि एक विचारक की भी थी जिसमें एम. एन. राय से गांधी तक की प्रभाव धाराएं थीं। यहां की भू-सांस्कृतिकी को समझने के लिए उन्होंने खास अध्ययन आरंभ कराए जो राष्ट्रीय स्तर पर उदाहरण बने। इनमें रेबारी, घुमक्कड़ चरवाहों के साथ जाकर पूर्णेन्दु ने एक नृतत्व शास्त्रीय शोध किया जिसमें रेवड़ों के पूरे रूट और मौसम के साथ इसके संबंध को भी देखा। सुनील रे ने भेड़ पालन और ऊन की जैसलमेर से जर्मनी तक की यात्रा को अपने अध्ययन में समेटा। प्रो. एम. एस. राठौड़ ने राजस्थान में देश के एक प्रतिशत पानी की मूल्यवत्ता और संरक्षण पर काम किया। शैल मायाराम ने मेवात में विभाजन से अद्यतन साम्प्रदायिक विघटन की स्थितियों को सबाल्टर्न एप्रोच से देखा। व्यास जी ने आईडीएस ससैक्स (यू.के) के साथ सहकार स्थापित किया और वहां जेंडर अध्ययनों के लिए फैकल्टी को भेजा गया। शैक्षिक शोध और मूल्यांकन को यहां चल रहे नवाचारों से जोड़ा गया। ये कुछ उदाहरण मात्र हैं जो व्यास जी की नवोन्मेषी दृष्टि का परिचय देते हैं।

नागरिक समाज की भूमिका के प्रति व्यास जी बहुत आशावादी थे। उन्होंने हरिजन सेवक संघ, खादी ग्रामोद्योग, प्रौढ़ और महिला शिक्षा संस्थाओं से लेकर लोक अध्ययन संस्थाओं, एस डब्ल्यू आर सी तिलोनिया और उरमूल तक सैकड़ों जमीनी संस्थाओं के नेटवर्क से आईडीएस को सीधे जोड़ दिया। इससे पूर्व अधिकांश स्वयं सेवी संस्थाओं का सरकार से या तो कोई रिश्ता ही नहीं था अथवा टकराहट पूर्ण संबंध थे। व्यास जी सरकार को जनता का चुना हुआ प्रतिनिधि मानते थे और स्वयंसेवी संस्थाओं को नागरिक पहल, इसलिए इन्हें परस्पर पूरक के रूप में देखते थे। उन्होंने दोनों स्तरों पर एक समझदारी विकसित कर संवाद कायम किया। फलतः आईडीएस वर्षों एक सरकार और नागरिक समाज के बीच जीवंत संवाद का केन्द्र बना रहा। इस तरह उन्होंने आईडीएस के संकल्प 'सूक्ष्म यथार्थ और व्यापक नीतियों के बीच सेतु निर्माण' की प्रक्रिया को व्यावहारिक रूप दिया। दलित उत्पीड़न पर दो-एक कार्यशाला आईडीएस में तब आयोजित हुई थीं जब मानवाधिकार आयोग भी अस्तित्व में नहीं आया था। इसी तरह संविधान के 73वें सशोधन के फलस्वरूप पंचायतों में महिलाएं बड़ी तादाद में चुनकर आयीं। आईडीएस ने पहल करके एक वृहद कार्यशाला आयोजित की जिसमें इन महिलाओं को प्रशिक्षित करने की रूपरेखा तैयार की गयी। ऐसे अनेक उदाहरण आईडीएस के रिकॉर्ड में दर्ज होंगे। यह एक ऐसा केन्द्र बन गया था जहां बेहतर काम करने वाले सरकारी अधिकारी और सामाजिक एक्टिविस्ट बड़े अपनाने से औपचारिक ही नहीं, अनौपचारिक रूप से भी आते-जाते थे और संवाद करते थे।

मुझे लगता है कि व्यास जी को राजस्थान और बीकानेर से विशेष लगाव था और वे अपनी मेधा और अनुभवों से सृजित पूंजी का यहीं निवेश करना चाहते थे। अन्यथा उनके लिए दुनिया के किसी भी शीर्ष संस्थान में जगह हो सकती

थी। आईडीएस के निदेशक से चेयरमेन तक रहने के बाद उन्होंने अपने को बीकानेर और अजित फाउण्डेशन के लिए समर्पित कर दिया। एक समय बीकानेर के भूजिया पापड़ उद्यम पर उन्होंने एक अनूठा शोध प्रस्तुत किया था। अब वे वहां के दूसरे पहलुओं पर अध्ययन करवाने लगे। व्यास जी को नजदीक से समझने का अवसर भी मुझे बीकानेर प्रसंग से ही मिला था। उन दिनों हरीश मादानी और नंदकिशोर आचार्य आईडीएस में उनसे मिलने आते थे। सौभाग्य से मुझे उनका स्नेह और मार्गदर्शन पहले से ही हासिल था। आईडीएस से भी व्यास जी का रिश्ता आखिर तक बना रहा। वहां उनके कमरे में ही अक्सर मुलाकात होती थी। वे अजित फाउण्डेशन के क्रियाकलापों के बारे में बताते थे। इनमें थोड़ा-सा सहयोग मैंने भी किया। व्यास जी ने अजित फाउण्डेशन को युवाओं पर केन्द्रित किया। व्यास जी ने यूनिसेफ के सहयोग से दो राष्ट्रीय विमर्श आयोजित किये। वे राजस्थान की युवा नीति को अंतिम रूप दिलवाने के लिए प्रयासरत थे। वे इसे ऐसे भविष्य से जोड़कर देखते थे जो अत्यंत मौजूं है।

चूंकि हम लोग भी शहरी गरीब बस्तियों में शिक्षा और बालिका सशक्तिकरण के लिए काम करते रहते हैं। वे बड़े जिज्ञासु बनकर हमारे काम के बारे में पूछते रहते। हमारे बुलेटिन 'मीमांसा' के लिए भी वे उत्सुक रहते थे। 'विकल्प' में लिखने के आग्रह के साथ वे इस पर भी चर्चा करते थे कि इसे कैसे और विस्तार दिया जाये। हमने अपनी संस्था समान्तर की ओर से आईडीएस के साथ मिलकर हाशिये के समुदायों के बच्चों की शिक्षा पर एक राष्ट्रीय विमर्श आयोजित किया था। व्यास जी ने इसके उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता के हमारे अनुरोध को सहर्ष स्वीकारा था। वे कार्यक्रम में सबसे देर तक मिलते-जुलते और बतियाते रहे। राजस्थान के सक्रिय व्यक्तियों और संस्थानों को उनकी रिक्ति का अहसास बहुत तीव्र होगा। आखिर में, मेरा प्रस्ताव है कि आईडीएस को उनकी स्मृति में हर वर्ष एक व्याख्यान आयोजित करना चाहिए। ऐसी एक व्याख्यान शृंखला अजित फाउण्डेशन बीकानेर में आयोजित कर सकता है। इस तरह हम व्यास जी की मातृभूमि और कर्मस्थली में उनकी स्मृतियों को संजोते हुए अपने कामों में उनसे प्रेरित और अनुप्राणित हो सकते हैं। मुझे लगता है ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो इन उपक्रमों से जुड़ना चाहेंगे। ◆

लेखक परिचय : 'शिक्षा विमर्श' के संस्थापक संपादक, द्वैमासिक 'संस्कृति मीमांसा' के संपादक, स्वयंसेवी संगठन समान्तर 'सेन्टर फॉर कल्चरल एक्शन एण्ड रिसर्च' के कार्यकारी निदेशक (मानद) हैं।

संपर्क : 9828169277; samantarcsc@gmail.com